## राग केदारो

**भूलवणीनी रामत कीजे, वाला तमे अम आगल थाओ रे।**
**दोडी सको तेम दोडजो, जोइए अम आगल केम जाओ रे।। १ ।।**

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे वालाजी! चलो हम भुलवनी की रामत खेलें। आप हमारे आगे हो जाओ। जितना दौड़ सको, दौड़ना। देखती हूं, आप हमारे आगे कैसे भागते हो?

**भूलवणीमां भूलवजो, देजो वलाका अपार।**
**भूलवी तमारी हूं नव भूलूं, तो हूं इंद्रावती नार।। २ ।।**

भुलवनी में अनेक चक्कर देकर आप मुझे भुलाना। यदि आपके भुलाने पर भी मैं न भूली, तब ही इन्द्रावती नारी कहलाने की हकदार होऊंगी।

**जुओ रे सखियो वाले भूलवी मूने, पण हूं केमे नव टली।**
**अनेक वलाका दीधां मारे वाले, तो हूं मलीने मली।। ३ ।।**

हे सखियो! देखो वालाजी मुझे भुला रहे हैं, पर मैंने उनका पीछा नहीं छोड़ा। वालाजी ने अनेक चक्कर दिए तो भी मैं उनके साथ ही रही।

**रहो रहो रे वाला मारे वांसे थाओ, हूं तम आगल थाऊं रे।**
**सांची तो जो भूलवुं तमने, मारा साथ सहुने हसावूं रे।। ४ ।।**

अब श्री इन्द्रावतीजी वालाजी से कहती हैं, हे वालाजी! ठहरो, अब मैं तुम्हारे आगे होती हूं। तुम मेरे पीछे आओ। मैं तुमको भुलाऊंगी तो सच्ची सखी कहलाऊंगी। सब साथ को हंसाऊंगी।

**सखियो तमे सावचेत थाजो, रखे कोई मूकतां हाथ रे।**
**हमणा हरावुं मारा वालाजीने, जो जो तमे सहु साथ रे।। ५ ।।**

हे सखियो! तुम सावधान हो जाओ। तुम हाथ नहीं छोड़ना। मैं अभी वालाजी को हराती हूं, तुम देखना।

**भूलीस मा–रे वचिखिण वाला, आवी मारे वांसे वलगो।**
**अनेक बलाका जो हूं दऊं, पण तूं म थाइस अलगो।। ६ ।।**

आओ वालाजी! मेरा पीछा करो। हे मेरे कुशल वालाजी! भूलना नहीं। हे वालाजी! मैं अनेक चक्कर दूंगी तो भी आप अलग नहीं होना।

**एक वलाका मांहें रे सखियो, वालो भूल्या ते प्रथम मूल।**
**दिए सखी ताली पडिआलोटे, हंसी हंसी आवे पेट सूल।। ७ ।।**

श्री इन्द्रावतीजी ने एक ही दांवपेंच में वालाजी को भुला दिया (श्री इन्द्रावतीजी श्री श्यामाजी के पैरों के नीचे से निकल गईं। वालाजी खड़े ही रह गए क्योंकि वह श्री श्यामाजी के पैरों के नीचे से निकलें कैसे?) इसलिए भूल गए और हार गए। तब सब सखियों ने ताली बजा-बजाकर इतनी हंसी की कि उनके पेट हंसते-हंसते दुखने लगे।

**सहु साथ मलीने साबत कीधुं, इंद्रावती विविध विसेक।**
**घणी थई रामत ने वली थासे, पिउ भूलवतां राखी रेख।। ८ ।।**

इस प्रकार सब सखियों को सिद्ध हो गया कि खासकर श्री इन्द्रावतीजी ने ही हमारी लाज रखी है और पियाजी को भुला दिया है। रामत बहुत हुई और आगे भी होगी, किन्तु जीत हमारी ही होगी। (जीत

Nijanand App

इसलिए होगी कि सब सखियां एक-दूसरे के पैरों के नीचे से निकल सकती हैं, पर वालाजी नहीं निकल सकते, वहीं खड़े रह जाएंगे)

॥ प्रकरण ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ ४९८ ॥

## राग कल्याण–चरचरी

**आज राज पूरण काज, मन मनोरथ सुंदरी।**
**मन मनोरथ सुंदरी, सखी मन मनोरथ सुंदरी॥ १ ॥**

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हे सखियो! आज वालाजी हमारी सब इच्छाएं पूर्ण करेंगे।

**विध विधना विलास, मगन सकल साथ।**
**मरकलडे करे हांस, रेहेस रामत विस्तरी॥ २ ॥**

तरह-तरह के आनन्द में सखियां मग्न हैं और मुस्कराकर हंसती हैं। तरह-तरह के खेल खेलती हैं।

**कह्यो न जाय आनंद, अंग न माय उमंग।**
**विकसियां अमारा मन, रहियो सर्वे हरवरी॥ ३ ॥**

इस समय के आनन्द का वर्णन नहीं हो सकता। अंग में उमंग समाती नहीं है। सबके मन प्रफुल्लित हैं और सब अत्यन्त तेजी से खेल रही हैं।

**आ समेनो वृंदावन, जुओ रे आ सोभा चंद।**
**फूलडे अनेक रंग, रमे साथ परवरी॥ ४ ॥**

इस समय वृन्दावन के चन्द्रमा की तथा अनेक रंग के फूलों की शोभा देखो। ऐसे में हमारे सुन्दरसाथ मग्न होकर खेल रहे हैं।

**काबर कोयल स्वर, कपोत घूमे चकोर।**
**मृगला वांदर मोर, नाचत फेरी फरी॥ ५ ॥**

मैना, कोयल के मीठे स्वर गूंज रहे हैं। कबूतर और चकोर घूम रहे हैं। हिरण, बन्दर, मोर घूम-घूमकर ऐसे सुन्दर दृश्य को देखकर नाच रहे हैं।

**स्यामनां उलासी अंग, उलट अमारे संग।**
**मांहों–मांहें मकरंद, व्यापियो विविध पेरी॥ ६ ॥**

श्री श्यामजी (श्री कृष्णजी) के अंग का उल्लास देखकर हमारे अंग में भी उमंग आती है और आपस में काम की लपट तरह-तरह से अंग में भरी है।

**रामत करे कामनी, विलसतां वाधी जामनी।**
**सखी सखी प्रते स्याम घन, दिए सुख दया करी॥ ७ ॥**

सखियां रामत करती हैं। रात भी इस आनन्द में स्थिर हो गई है। श्री श्यामजी (श्री कृष्णजी) भी एक-एक गोपी के पास बारी-बारी से जाकर सुख देते हैं।

**रमतां दिए चुमन, एक रस जुवती जन।**
**करी जुगत नौतन, चितडा लीधा हरी॥ ८ ॥**

खेलते-खेलते चुम्बन देती हैं। सब युवतियां एक रस में भीगी हैं। वालाजी ने नए-नए प्यार देकर उनके चित्त को मोह लिया है।

Nijanand App